IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 9, March 2025
Impact Factor: 7.67

भारतीय संदर्भ में समावेशी शिक्षा की अवधारणा

राकेश हारोड़

पी.एच.डी.शोधार्थी, विक्रम विश्वविधालय उज्जैन

डॉ. अंतिम बाला पाण्डेय

सहायक प्राध्यापक, प्रशांति कॉलेज ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज, उज्जैन

प्रस्तावना –

"वे कहते है की अगर आप विकलांग है या अपंग है तो इसमें आपकी कोई गलती नही है, और साथ ही दुनिया को दोष देने या अपने ऊपर किसी दया की उम्मीद करना सही नही है। बस आपके भीतर सकारात्मक विचार होने चाहिए और स्थिती के अनुसार जितना हो सकें अपना अच्छा योगदान देना चाहिए । अगर मनुष्य अपंग है तो उसे अपने मन से अपंग या विकंलाग नही होना चाहिए। "

–स्टीफन हॉकिंग–

स्टीफन हॉकिंग मोटार न्यूरान नामक गंभीर बीमारी से ग्रसीत होने के बाद भी संसार के र्सवश्रेष्ठ वैज्ञानिको में सुमार थे। अपनी दिव्यागंता को कभी बाधा नही बनने दिया । अपनी कमजोरी को ताकत बनाया ।

इसी प्रकार सभी बालक एक समान नहीं होते हैं,उनमें वैयक्तिक विभिन्नताएँ होती हैं। बालकों में असमानताएँ बौद्धिक व शारीरिक विषमताओं के कारण उत्पन्न होती है। इसीलिए जो बच्चें सामान्य बच्चों से अलग प्रकार के होते है,उन्हैं विशिष्ट बालकों की संज्ञा दी जाती है। विशिष्ट बालकों में सामान्य बालकों की अपेक्षा कुछ असमानता तथा विशेषताएं पाई जाती हैं , इनमें विभिन्नताए की चरम सीमा वाले बालक विशिष्ट बालको की श्रेणी में आते है। किन्तु ऐसे बालक अपने आप को समाज से अलग कटा हुआ महसुस करते लगते है, और उसके अन्दर हीन भावना घर करने लगती है। विभिन्न शिक्षाविदों ने यह महसुस किया कि यदि सामान्य और विशिष्ट बालकों को एक साथ शिक्षा प्रदान की जाये तो दोनों एक दुसरे के नजदीक आयेंगे ,जिससे असर्मथ्य बालको में जीवन के प्रति चुनौती और सामान्य बालको में उनके प्रति सहानुभूति का भाव विकसित होगा। इस प्रकार से समाज की मुख्यधारा से जुडने का अवसर भी प्राप्त होगा।